E Content for the Student of Patliputra University

Sub – Political Science

B.A. (Hons.) Part I , Paper - II

Topic – Meaning and Scope of Comparative Politics

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Political Science
R.R.S. College, Mithila

तुलनात्मक राजनीति राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत एक नया आयाम है। अल्पसमय में ही इसने, शोधपूर्ण अध्ययन, सिद्धान्त सिद्धांतों के निरूपण, अध्ययन का दायरा विकसित करने आदि के कारण, अपनी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता सिद्ध की है। यह सच है कि राजनीति विज्ञान में तुलनात्मक अध्ययन करने की पुरानी परम्परा है, जो आज भी बनी हुई है। इस क्रम में तुलनात्मक संविधानों एवं सरकारों का अध्ययन किया जाता रहा है। अरस्तू ने अपने संविधान संबंधी विवेचन के लिए 158 संविधानों का अध्ययन किया था। भारतीय संविधान के निर्माण में कई प्रावधानों को दूसरे देश की संविधान से अपनाया गया। इसी प्रकार सरकारों और इनकी संस्थाओं एवं पदाधिकारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता रहा है। किन्तु ऐसे सारे अध्ययन औपचारिक और सतही रहे हैं। इन अध्ययनों में केवल कानूनी प्रावधानों का उल्लेख किया जाता रहा है। प्रावधानों की पृष्ठभूमि तथा शक्ति के उपयोग के प्रेरक तत्वों एवं उत्तरदायी कारकों को अध्ययन क्रम में नजरअंदाज किया जाता रहा है।

तुलनात्मक राजनीति इन कमियों को दूर करने का प्रयास करते हुए एक व्यवस्था की दूसरी व्यवस्था से हर पहलू, पृष्ठभूमि, राजनीतिक व्यवहार, शक्ति के उपयोग - दुरुपयोग की स्थिति आदि का अध्ययन करती है। तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन औपचारिक तथा सतही नहीं ~~बल्कि~~ वास्तविकता पर आधारित एवं गहराई का होता है। एडमंड फ्रीमैन के अनुसार – तुलनात्मक राजनीति राजनीतिक संस्थाओं एवं सरकारों के विविध प्रकारों का एक तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन है।

Scanned with CamScanner

किन्तु यह परिभाषा व्यापकता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। एम० करटिस ने लिखा है, " राजनीतिक संस्थाओं और राजनीतिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण भिन्नताओं, समानताओं और असमानताओं में तुलनात्मक राजनीति का संबंध है।

संक्षेप में, तुलनात्मक राजनीति दो राजनीतिक व्यवस्थाओं का व्यापक रूप में तुलनात्मक अध्ययन करता है। उदाहरणार्थ, अगर दो लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का ही तुलनात्मक अध्ययन करना होगा तो मात्र संविधान का अध्ययन कर इसे पूरा नहीं माना जा सकता है। वास्तविक अध्ययन के लिए दोनों व्यवस्थाओं के दलीय स्वरूप, चुनाव प्रक्रिया, व्यवस्था के प्रति लोगों की जागरूकता, राजनीतिक संस्कृति का स्तर, न्यायिक व्यवस्था की स्वतंत्रता और निष्पक्षता, कानून के शासन की स्थिति आदि आदि ऐसे अनेक तत्वों का अध्ययन करना होगा। तभी तुलनात्मक अध्ययन की वास्तविक स्थिति तक पहुँचा जा सकता है। इसमें अध्ययन की व्यवहारिक दृष्टि पर बल दिया जाता है।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति से इसके अर्थ को और भी स्पष्ट किया जा सकता है। इसका दृष्टिकोण राजनीतिक क्रियाकलाप के अध्ययन पर बल देता है। इसमें राजनीतिक प्रक्रिया अध्ययन का आधार होता है, केवल कानूनी प्रक्रिया नहीं। इसमें राजनीतिक सत्ता का अध्ययन, उसकी पृष्ठभूमि, स्वरूप तथा सत्ता के प्रयोग की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। इसमें राजनीतिक व्यवस्था और मानव संबंध को भी अध्ययन का आधार माना जाता है। न्यायिक हस्तक्षेप, मानवाधिकार, कानून के शासन, सत्ता पर नियंत्रण की प्रक्रिया के आधार पर विभिन्न व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि तुलनात्मक राजनीति अध्ययन का एक व्यापक आयाम प्रस्तुत करता है। राजनीति का प्रायः सभी क्षेत्र इससे संबद्ध है।

Scanned with CamScanner

तुलनात्मक राजनीति का क्षेत्र –

राजनीतिविज्ञान के अन्तर्गत तुलनात्मक राजनीति के व्यापक अध्ययन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इसका वर्णन निम्न आधार पर किया जा सकता है –

(1) राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन – तुलनात्मक राजनीति केवल राज्य को ही इकाई का नहीं बल्कि व्यापक संदर्भ में राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन करता है। राजनीतिक व्यवस्था कई अन्तः क्रियाओं से जुड़ी संरचनाओं का समुच्चय है। ये संरचनाएँ अलग-अलग निश्चित कार्यों का संपादन करते हुए राजनीतिक व्यवस्था की पहचान तथा दायित्व के निर्वाह में सहयोग करती है। तुलनात्मक राजनीति का संबंध अलग-अलग संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन के साथ साथ एक राजनीतिक व्यवस्था का दूसरी व्यवस्था से तुलनात्मक अध्ययन से है। स्वाभाविक है कि इस कारण व्यवस्था की संरचनाएँ के क्रियाकलाप तथा व्यवस्था पर पड़ने वाले दबावों एवं उनके निर्गत निर्णयों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार तुलनात्मक राजनीति में अध्ययन क्षेत्र काफी व्यापक होता है।

(2) राजनीतिक व्यवस्था के क्रियाकलापों का अध्ययन – हर राजनीतिक व्यवस्था में कुछ राजनीतिक प्रक्रियाएँ चलती हैं, जिनमें कुछ भिन्नता भी होती है, जिसका अलग अलग प्रभाव व्यवस्था पर पड़ता है। तुलनात्मक राजनीति इन क्रियाकलापों, प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है।

(3) संविधानवाद का अध्ययन – तुलनात्मक राजनीति केवल संविधान या उसके लिखित प्रावधानों का अध्ययन पर महत्व न देकर संविधानवाद के अध्ययन पर बल देता है। संविधानवाद संविधान की भावना को व्यक्त करता है। इसमें संविधान को मात्र शक्ति का स्रोत ही नहीं बल्कि पदधारकों पर नियंत्रण के प्रावधान का आधार भी समझा जाता है। तुलनात्मक राजनीति में Spirit of the Constitution के अध्ययन पर बल देता है।

(4) राजनीतिक व्यवस्था की पृष्ठभूमि का अध्ययन – हर राजनीतिक व्यवस्था की कुछ सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक

Scanned with CamScanner

पृष्ठभूमि होती है, उसका प्रभाव व्यवस्था पर पड़ता है। जैसे भारत में बहु सांस्कृतिक सामाजिक ढाँचा, जातिवाद का प्रभाव, गुटनिरपेक्षता की नीति, मिश्रित अर्थव्यवस्था आदि का प्रभाव व्यवस्था पर पड़ता है। उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी नीतियों से दूर होने के बावजूद राजनीतिक ढाँचों पर ब्रिटेन का प्रभाव कायम है। ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली, कानून का शासन, कार्यपालिका का उत्तरदायी व्यवस्था, शक्ति पृथक्करण, नियंत्रण एवं संतुलन आदि प्रावधान इन व्यवस्थाओं को मजबूत पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं।

5. राजनीतिक दल एवं दबाव गुट का अध्ययन - आज राजनीतिक दल एवं दबाव गुटों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। फलस्वरूप तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का यह एक महत्वपूर्ण विषय वस्तु है।

6. मतदान व्यवहार का अध्ययन - तुलनात्मक राजनीति में यह समझा जाता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ मत-व्यवहार की पवित्रता पर निर्भर करती है। अतः सरकारों के गठन, निर्णय प्रक्रिया आदि में मतदान व्यवहार की प्रक्रिया खास महत्व रखती है।

7. व्यवस्था परिवर्तन एवं क्रांतियां - तुलनात्मक राजनीति व्यवस्था परिवर्तन एवं क्रांतियों, वर्ग असंतोष, अलगाव, गृहयुद्ध आतंकवाद जैसे तत्वों का भी प्रमुखता से अध्ययन करती है।

8. विविध सैद्धांतिक आयामों का अध्ययन - वर्तमान समय में कई सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के आधार पर व्यवस्था की स्थिति का मूल्यांकन एवं वर्गीकरण किया जाता है- राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक विकास एवं आधुनिकीकरण, राजनीतिक संचार भर्ती, समाजीकरण; मानवाधिकार आदि। इन अनेक संदर्भों का अध्ययन तुलनात्मक राजनीति में किया जाता है।

इस प्रकार तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन क्षेत्र काफी व्यापक है।